(2) विषय—अरस्तु ...
क्षुद्र काव्य।

खण्डकाव्य

खण्डकाव्य में नायक के जीवन के व्यापक चित्रण के स्थान पर उसके किसी एक पक्ष, अंश अथवा रूप का चित्रण होता है, लेकिन महाकाव्य का संक्षिप्त रूप अथवा एक सर्ग खण्डकाव्य नहीं होता है। पूरे खण्डकाव्य में एक ही छन्द का प्रयोग होता है। 'पंचवटी', जयद्रथ-वध 'नहुष', 'सुदामाचरित', 'पथिक' 'गंगावतरण', 'हल्दीघाटी', 'जय हनुमान' आदि हिन्दी के कुछ प्रसिद्ध खण्डकाव्य हैं।

पण्डित विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में खण्डकाव्य की परिभाषा लिखी है—

भाषा विभाषा नियमात् काव्यं सर्गसमुत्थितम्।
एकार्थप्रवणै: पद्यै: सन्धि-साग्रय वर्जितम्।
खण्डकाव्यं भवेत् काव्यस्यैक देशानुसारि च।

इस परिभाषा के अनुसार किसी भाषा या उपभाषा में सर्गबद्ध एवं एक कथा का निरूपक ऐसा पद्यात्मक ग्रन्थ जिसमें सभी सन्धियाँ न होकर खण्डकाव्य हैं। वह महाकाव्य के केवल एक अंश का ही अनुसरण करता है। तदनुसार हिन्दी के कतिपय आचार्य खण्डकाव्य ऐसे काव्य को मानते हैं। जिसकी रचना तो महाकाव्य के ढंग पर की गई हो, पर उसमें समग्र जीवन न ग्रहण कर केवल उसका खण्ड विशेष ही ग्रहण किया गया हो अर्थात् खण्डकाव्य में एक खण्ड जीवन इस प्रकार व्यक्त किया जाता है जिससे वह प्रस्तुत रचना के रूप में स्वत: प्रतीत हो।

वस्तुत: खण्डकाव्य एक ऐसा पद्यबद्ध काव्य है जिसके कथानक में एकात्मक अन्विति हो, कथा में एकांगिता हो तथा कथाविन्यास क्रम में आरम्भ, विकास, चरमसीमा और निश्चित उद्देश्य में परिणति हो और वह आकार में लघु हो। लघुता के मापदण्ड के रूप में आठ से कम सर्गों के प्रबन्धकाव्य को खण्डकाव्य माना जाता है।

खण्डकाव्य के उदाहरण—

(1) मैथिलीशरणगुप्त—'जयद्रथ वध', 'पंचवटी', 'नहुष'।

(2) सियारामशरण गुप्त—'मौर्य विजय'।

Scanned with CamScanner

(3) रामनरेश त्रिपाठी—'पथिक'।

(4) जयशंकर प्रसाद—'प्रेम-पथिक'।

(5) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला—'तुलसीदास'।

आचार्य विश्वनाथ ने खण्डकाव्य की परिभाषा में किसी ऐसी रचना का उदाहरण नहीं दिया, जिसे खण्डकाव्य कहा जा सकता है। कुछ विद्वान-'पृथ्वीराजरासो' को खण्डकाव्य कहते हैं, क्योंकि उसमें पृथ्वीराज के समग्र जीवन का चित्रण नहीं है, परन्तु अपनी उदात्त शैली के कारण 'पृथ्वीराजरासो' को खण्डकाव्य न मानकर महाकाव्य मानते हैं।

खण्डकाव्य की व्याख्या—खण्डकाव्य शब्द साहित्य जगत में कोई नया नाम नहीं है। इसकी अजस्रधारा संस्कृत काल से ही विद्यमान रही है, किन्तु इसका स्वरूप आधुनिक काल में ही अधिक निश्चित हो पाया है। भारतीय साहित्य कोश के अनुसार, "जीवन के अपार विस्तार को उसके वृहत्तम आयामों में चित्रित करने वाले महदाकार काव्य के रूप में महाकाव्य से भिन्न जीवन का एकपक्षीय खण्ड चित्र प्रस्तुत करने वाला लघु आकार का खण्डरूप।"

- उदात्त काव्य में महाकाव्य, त्रासदी और देवसूक्त।
- यथार्थ काव्य में यथार्थ जीवन ने चित्रण करने वाले काव्य।
- क्षुद्र काव्य में कामदी और अवगीति काव्य।

विषय के आधार पर अरस्तु ने उदात्त और यथार्थ का पृथक्करण किया है, यह उचित नहीं है।

(3) **मिश्र**—इसमें कवि व्यक्तित्व एवं विषय का मिश्रण दोनों को समाहित किया गया है।

(4) **अनुकरण-गीति**—इसमें समाख्यान काव्य और दृश्य काव्य आते हैं।

(5) **माध्यम**—इसमें गद्य और पद्य का मिश्रण है।

अपनी मौलिक प्रतिभा के बल पर अरस्तु ने अपने समय के साहित्य को देखकर काव्य वर्गीकरण का स्तुव्य प्रस्तुत किया है। इस वर्गीकरण में उनका समस्त समकालीन साहित्य वर्गीकृत हो गया है। अप्रत्यक्ष रूप में दृश्य, श्रव्य तथा प्रबन्ध व मुक्तक के संकेत अरस्तु ने काव्य वर्गीकरण में दिए हैं

खण्डकाव्य की मूल प्रेरणा—खण्डकाव्य की मूल प्रेरणा को स्पष्ट करते हुए डॉ. शकुन्तला दुबे ने लिखा है "खण्डकाव्य की प्रेरणा के मूल में अनुभूति का स्वरूप एक सम्पूर्ण जीवन खण्ड की प्रभावात्मकता से बनता है। जीवन के मर्मस्पर्शी खण्ड का बोधमात्र कवि के हृदय में नहीं होता, प्रत्युत उसका समन्वित प्रभाव उसके हृदय पर पड़ता है, तब प्रेरणा के बल पर जो रूप खड़ा होता है, वह खण्डकाव्य कहलाता है।"

खण्डकाव्य के रचयिता कथा के प्रमुख पात्र के जीवन खण्ड को विस्तृत रूप देते हैं तो कहीं पर संक्षेप में परिधि को छोटा कर अपनी काव्यगत विशेषताओं का परिचय देते हैं। यही कारण है कि खण्डकाव्य का कथानक कहीं बड़ा होता है, तो कहीं बहुत छोटा किन्तु कथा के इस विस्तार एवं संकोच के तारत्म्य से खण्डकाव्य की महत्ता नहीं आँकी जाती, क्योंकि जीवन के किसी एक अंग को स्पर्श करने वाला खण्डकाव्य अपनी छोटी से परिधि में भी अपना महत्व सिद्ध करता है।

Scanned with CamScanner